आए हैं। आप तो अलग-अलग बिखरे लोग हैं। इसलिए हम आपको एक राष्ट्र के रूप में विकसित करना चाहते हैं। जिन जिनकी उसमें सहभागिता रही उन व्यक्तियों ने गलत धारणाएं अपना लीं। अपने यहां राष्ट्रपति कैसे बन सकते हैं? राष्ट्र के अध्यक्ष तो बन सकते हैं। पर हमारे यहां शब्द प्रयोग चल पड़ा। उन्होंने कहा 'नेशन इन द मेकिंग'। उन्हें ऐसा दंभ हुआ, मानो वे राष्ट्र बना रहे हों। परन्तु हजारों वर्षो से देश में क्या था?

राष्ट्र कैसे बनता है इसे अथर्ववेद में बताया गया है। यहां के आत्मज्ञानी मनीषियों ने, विश्व के कल्याण की इच्छा से, सृष्टि के प्रारम्भ से तप किया। और उससे ऐसी चेतना युक्त आत्मा का निर्माण हुआ, जिसे राष्ट्र कहा गया। उसी के द्वारा राष्ट्रीय बल और तेज प्रकट हुआ। और इसीलिए, इस देश में निरन्तर रहने वाला, स्वयं को इस राष्ट्र का अंग मानने वाला, उसके आगे सदैव नतमस्तक होकर, उसकी सेवा करेगा। राष्ट्र की यह कल्पना है। परिभाषाएं तय करने से राष्ट्र नहीं बन जाता। अपने यहां साधना के द्वारा एक विशिष्ट जीवनशैली का निर्माण हुआ। उसे राष्ट्र कहा गया। राष्ट्र व राज्य एक नहीं हो सकते। भारत के अन्दर कई प्रकार के राजा थे, राज्य थे। राज्य अलग-अलग थे परन्तु राष्ट्र एक था। राष्ट्र एक होगा, प्रशासन की सुविधानुसार राज्य अलग अलग हो सकते हैं। एक राज्य में भी अलग अलग राष्ट्र हो सकते हैं। जैसे रूस में था। आज मुस्लिम एक राष्ट्र है, परन्तु राज्य कई हैं।

हिन्दू राष्ट्र एक है। उसमें राज्य कई प्रकार के बने हैं। इस कल्पना को ठीक से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, क्योंकि राष्ट्र भाव के दुर्बल होते ही, केवल सुविधाओं में आनंद मनाने वाला समाज खड़ा होता है। अंग्रेजों ने निश्चित रूप से सुविधाएं प्रदान की। लेकिन इससे उन्हें यह अधिकार नहीं मिल जाता कि हमारी प्राचीन परम्पराओं का वे नष्ट कर दें। हमने राज्य की इसी संकल्पना के आधार पर निर्मित संविधान की बातों को राष्ट्रीय माना।

'जन गण मन' आज हमारा राष्ट्रगान है। उसे सम्मान देना ही चाहिए। वह संविधान के आधार पर हमारा राष्ट्रगान है। परन्तु सही अर्थों में देखा जाए तो 'वंदेमातरम्' इस देश का राष्ट्रगीत है। 'जन गण मन' उस समय के राज्य को सामने रखकर दिया गया भाव है। 'वंदेमातरम्' में राष्ट्र का स्वभाव व उसकी शैली प्रकट होती है। 'वंदेमातरम्' के प्रतीक भगवा ध्वज को राष्ट्र का प्रतीक